मुकम्मल

सच्ची नमाज़

साथ में

नीयत नामा

और

वसनून दुआएं



नाज़ बुक डीपो कोलूटोला मस्जिद के
कलक

916727
63908

मुकम्मल

सच्ची नमाज़

For M/S SULTANA INDUSTRIES
Prop.-Sk. Abdul Gafar
At- Majhikhanda, P.O.-Niali
Dist-Cuttack, PIN-75[illegible]

अरबी-हिन्दी

साथ में

नीयत नामा

- मस्नून दुआएँ
- मसाइले नमाज़
- नफ़्ल नमाज़ें
- औरतों की नमाज़
- क़ुरबानी • अ़क़ीक़ा
- जनाज़े का बयान

नाज़ बुक डिपो

कोलूटोला मस्जिद के अन्दर कलकत्ता - ७३

पाँच वक़्त और दीगर नमाज़ों का जदवल

वक़्त	फ़र्ज़ से पहले सुन्नते ग़ैर मुअक्किदा	फ़र्ज़ से पहले सुन्नते मुअक्किदा	फ़र्ज़	फ़र्ज़ के बाद सुन्नते मुअक्किदा	नफ़्ल	वाजिब	नफ़्ल	रकअतों की कुल तादाद
फ़ज्र		२	२					४
ज़ुहर		४	४	२	२			१२
अस्र	४		४					८
मग़रिब			३	२	२			७
इशा	४		४	२	२	३ वित्र	२	१७
जुम्आ		४	२	४/ग़ैर मुअक्किदा २	२			१४
दीगर नमाज़ें	इशराक़ ४/१२	चाश्त ४	सब नफ़्ल		तरावीह ३०			
	अव्वाबीन ६	तहज्जुद १२			ईदैन २			

नोट — तरावीह और ईदैन की नमाज़ें वजिब हैं। इशराक़-चाश्त-अव्वाबीन और तहज्जुद की नमाज़ें नफ़्ल लेकिन अहम और ज़रूरी।

इस्लाम की बुनियाद पाँच बातों पर है—.....

१ कलिमए तैयब ○ दिल से क़ुबूल करना और ज़ुबान से इक़रार करना।

२ नमाज़ ○ रोज़ाना पाँच वक़्त नमाज़ों का अदा करना।

३ रोज़ा ○ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना।

४ हज ○ साहबे हैसियत को सारी उम्र में एक बार हज करना।

५ ज़कात ○ साहबे निसाब को हर साल अपनी कमाई का चालीसवां हिस्सा मुस्तहेक़ीन में तक़सीम करना।

इस्लामी कलिमे

१. **कलिमए तैयब**

اَوَّلُ کَلِمَتِیْ : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ○

२. **कलिमए शहादत**

وَمِنْ شَہَادَتِیْ : اَشْہَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْہَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ○

३. **कलिमए तमजीद**

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ○

सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व ला इ ला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व ला हौला व ला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीइल अ़ज़ीम ○

४. कलिमए तौहीद

चहारम कलमए तौहीद : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُوْ الْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी क लहू लहुलमुल्कु व लहुल हम्दु युहई व युमीतु व हु व हय्युल ला यमूतु अ ब दन अ ब दा जुल जलालि वल इक्रामि बि य दिहिल ख़ैर ● व हु व अ़ला कुल्लि शयइन क़दीर ○

५. कलिमए इस्तिग़फ़ार

पंजम कलमए इस्तग़फ़ार : اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ
ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً
وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ اَعْلَمُ
وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

अस्तग़फ़िरुल्ला ह रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिन अज़्नबतुहू अ म दन अव ख़ त अन सिर्रन औ अ़लानि य तवँ व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़म्बिल लज़ी आअ़लमु व मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी ला आअ़लमु इन्न क अन त अ़ल्लामुल युयूबि व सत्तारुल औयूबि व ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि व ला हव ल वला कुव व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीइल अ़ज़ीम ○

६. कलिमए रद्दे कुफ़्र

शश्म कलमए रद्दे कुफ़्र : اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ
اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّ اَنَا اَعْلَمُ بِهٖ
وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ
وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ
وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَاَسْلَمْتُ
وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ ज़ु बि क मिन अन उशरि क बि क शयअँ व अना आअ़ ल मु बिही व अस्तग़फ़िरु क लिमा ला आअ़लमु बिही तुब्तु अ़नहु व तबर्रातु मिनल कुफ़रि वशशिर्कि वल किज़बि वल ग़ी बति वल बिद अ़ति वन्नमी म ति वल फ़्वाहिशि वल बुहतानि वल मआ़सी कुल्लिहा व अस्लम्तु व आमनतु व अक़ूलु लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ○

सिफ़त ईमान मुजमल

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ وَاَرْكَانِهٖ

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु व बि असमाएही व सिफ़ातिही व क़बिल्तु जमी अ़ अहकामिही व अरकानिही ○

ईमाने मुफ़स्सल

صِفَتُ اِيْمَانٍ مُفَصَّلٍ اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ
وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ
تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

आमन्तु बिल्लाहि व मला इ क तिही व कुतु बिही व रुसुलिही वल यौमिल आख़िरि वल क़द्रि ख़ैरेही व शरेही मिनल्लाहि तआला वल बाअ्सि बाअदल मौत ○

नीयत का मतलब

नीयत के माने हैं दिल में किसी काम के करने का इरादा करना जैसे वुज़ू करने से पहले ज़हन में यह रखना कि मैं वुज़ू करता हूँ या करती हूँ। कुछ काम ऐसे हैं कि नीयत न भी हो तब भी अरकान पूरे कर लेने से वह काम हो जाता है जैसे ग़ुस्ल करना, वुज़ू करना वग़ैरा। लेकिन ज़्यादातर काम ऐसे हैं कि बग़ैर नीयत के वह पूरे हो ही नहीं सकते जैसे नमाज़ पढ़ना। यह समझना और तै कर लेना ज़रूरी होता है कि किस वक़्त की, कौन सी और कितनी रकअत नमाज़ पढ़ना है। नमाज़ पढ़ने के लिए नीयत करना फ़र्ज़ है। यानी दिल में इरादा करे और सोच समझ ले कि कौन सी नमाज़ पढ़ी जा रही है। इसी इरादा और तै कर लेने को नीयत करना कहते हैं। मुंह से तलफ़्फ़ुज़ या उच्चरण का अदा करना मुस्तहब है। अपनी ज़ुबान या भाषा में नीयत करने से भूल होने की सम्भावना नहीं रहती है और बेहतर भी है। अरबी ज़ुबान में नीयत करना हो तो अरबी में मतन और उसका हिन्दी उच्चरण या अर्थ लिखा जाता है।

दुआ मांगने की भी बहुत अहमियत है। दुआ का मतलब है अल्लाह को अपनी या किसी की ज़रूरतों के लिए पुकारना, उस से मदद मांगना, इलतिजा करना। अल्लाह ही हमारी पुकार सुनता है, वह हाजत रवा है और सिर्फ़ वही इस लाइक़ है कि उस को पुकारा जाए। अल्लाह के सिवा और किसी को अपनी ज़रूरत या मदद के लिए पुकारना या किसी को भी हाजत रवा समझना शिर्क है। और शिर्क ऐसा गुनाह है जो बग़ैर तौबा-ए-नुसूहा के माफ़ नहीं होता।

नमाज़ों की नीयत

(अरबी मतन, साथ में हिन्दी तर्जुमा)

नमाज़े फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैं ने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

फ़ज्र की दो रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

ज़ुहर की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ سُنَّتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ ज़ुहर की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

ज़ुहर की चार रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ ज़ुहर की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

बाद ज़ुहर दो रकअत सुन्नत की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الظُّهْرِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ज़ुहर की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

दो रकअत नमाज़े नफ़्ल

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ النَّفْلِ مُتَوَجِّهًا
اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़े नफ़्ल वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

अस्र की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ अस्र की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

अस्र की चार रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ فَرْضَ اللّٰهِ
تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ अस्र की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

मग़रिब की तीन रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ
الْمَغْرِبِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ
الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज़ मग़रिब की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

मग़रिब की दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ मग़रिब की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

इशा की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ
الْعِشَاءِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ इशा की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

इशा की चार रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ
فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ इशा की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

इशा के फ़र्ज़ के बाद की दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ
الْعِشَاءِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इशा की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

वित्र नमाज़ तीन रकअत वाजिब की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْوِتْرِ وَاجِبًا لِلّٰهِ
تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज़ वित्र की वाजिब वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

तहीयतुल मस्जिद यानी मस्जिद में दाख़िल होने की दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ मस्जिद में दाख़िल होने की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

जुम्अ़ा से पहले की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةٍ قَبْلَ الْجُمُعَةِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुम्अ़ा के क़ब्ल की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

जुम्अ़ा की दो रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْجُمُعَةِ فَرْضَ
اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुम्अ़ा की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

बाद जुम्अ़ा चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةٍ بَعْدَ الْجُمُعَةِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुम्अ़ा के बाद की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

नमाज़े ईदुल फ़ित्र

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ عِيْدِ الْفِطْرِ مَعَ سِتَّةِ تَكْبِيْرَاتٍ
زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल फ़ित्र की वाजिब छः ज़ाइद तकबीरों के साथ वास्ते आल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

नमाज़े ईदुल अज़हा

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ عِيْدِ الْاَضْحٰى
مَعَ سِتَّةِ تَكْبِيْرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى
جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल अज़हा की वाजिब छः ज़ाइद

तकबीरों के साथ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

दो रकअत नमाज़े तरावीह

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ التَّرَاوِيْحِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَر

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ तरावीह की सुन्नत, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ❑

याद रखें

१. नफ़्ल नमाज़ चाहे वह ज़ुहर की हो मग़रिब की या इशा की, सब की नीयत एक ही जैसी होती है। यानी सिर्फ़ *नफ़्ल नमाज़* की नीयत ○

२. जमाअत के साथ नमाज़ों की नीयत में *"इक त दैतु बिहाज़ल इमाम"* اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا الْاِمَامِ भी कहे ○

३. जमाअत के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ें हैं– तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें- ईदैन की नमाज़- रमज़ान में नमाज़े तरावीह और नमाज़े वित्र वग़ैरा– और भी हैं ○

४. नीयत करने में इतनी देर न करे कि कोई रकअत या जमाअत ही छूट जाए- दिल में इरादा रखना ही काफ़ी है कि कौन-सी नमाज़ पढ़ी जा रही है ○

आयतुल कुर्सी

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ
سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ
مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ

بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम ला त ख़ुज़ुहू सि न तुँव वला नौम ० लहू मा फ़िस्समावाति वमाफ़िल् अर्द ० मन्ज़ल्लज़ी यश फ़ओ अिन्दहू इल्ला बि इज़निही यअ लमु मा बे न ऐदी हिम वमा ख़लफ़हुम वला युहीतू न बिशै इम् मिन् अिल्मेही इल्ला बिमा शा अ वसि अ कुर्सियुहुस्समावाति वल अर्द ० वला यऊ दुहू हिफ़्ज़ोहुमा व हु वल् अ़लीयुल अ़ज़ीम ○

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है, हदीस शरीफ़ में है कि जिसने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ी, उस के जन्नत में दाख़िल होने में मौत ही आड़ है और जो शख़्स सोते वक़्त उसको पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसके घर और उसके पड़ोसी के घर और आस-पास के कुछ घरों को (रात भर) अम्न व अमान में रखेगा।

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह और ३३ बार अलहम्दु लिल्लाह और ३४ बार अल्लाहु अक्बर पढ़ने की भी बड़ी फ़ज़ीलत आयी है।

वुज़ू का बयान

वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं

१. पेशानी के बालों से ठोढ़ी के नीचे तक और दोनों कानों की लो तक मुंह धोना ●

२. दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना ●

३. चौथाई सर का मसह करना ●

४. दोनों पांव टख़नों समेत धोना।

वुज़ू की सुन्नतें

१. नीयत करना २. शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना ३. पहले दोनों कलाई तक धोना ४. कुल्ली करना ५. मिस्वाक करना ६. नाक में पानी डालना, यानी सांस के साथ ऊपर को पानी लेना, जहां तक नर्म जगह है ७. हर अज़्व तीन-तीन बार धोना ८. सारे सर और कानों का मसह करना ९. दाढ़ी और उंगलियों का ख़िलाल करना १०. लगातार इस तरह धोना कि पहले मुंह धोए, फिर कुहनियों समेत हाथ धोए, फिर सर का मसह करे, फिर पांव धोए।

फ़ायदा *सुन्नत छोड़ने से वुज़ू तो हो जाता है, मगर सवाब कम मिलता है।*

फ़ायदा *वुज़ू में कोई वाजिब नहीं है।*

वुज़ू की मुस्तहब चीज़ें

१. क़िब्ला रुख़ होकर बैठना, २. मल-मल कर धोना, ३. दाहिनी तरफ़ से शुरू करना, ४. बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना, ५. गरदन का मसह करना, ६. दूसरे से मदद न लेना।

वुज़ू की मकरूह चीज़ें

१. ना-पाक जगह वुज़ू करना २. सीधे हाथ से नाक साफ़ करना, ३. वुज़ू करते वक़्त दुनिया की बातें करना ४. सुन्नत के ख़िलाफ़ वुज़ू करना ५. पानी ज़्यादा बहाना ६. ज़ोर से छपक्के मारना।

मस्अला वुज़ू में गरदन का मसह मुस्तहब है और गले का मसह बिद्अत है।

वुज़ू तोड़ने वाली बातें

१. *पाख़ाना-पेशाब, मज़ी, हवा का निकलना* २. *ख़ून या पीप निकल कर बह जाना* ३. *मुंह भर के क़ै हो जाना* ४. *टेक लगा कर सो जाना* ५. *मस्त या बेहोश हो जाना* ६. *रुकूअ़ व सज्दा वाली नमाज़ में खिलखिला कर हंसना।*

वुज़ू करने का मस्नून तरीक़ा

जब वुज़ू करने का इरादा हो तो दिल में नीयत करे कि मैं वुज़ू करता हूं, फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर तीन बार दोनों हाथों को पहुँचों तक धोए। फिर तीन बार कुल्ली और मिस्वाक करे। इसके बाद तीन बार नाक में पानी डाले और बाएँ हाथ से नाक साफ़ करे। फिर तीन बार मुंह धोए, पेशानी से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक। अगर दाढ़ी घनी हो, तो जो बाल चेहरे की हद में हैं, उन का धोना फ़र्ज़ है और जो बाल चेहरे की हद से बढ़े हों, उन का धोना ज़रूरी नहीं, हाँ, ऐसी दाढ़ी का ख़िलाल करना सुन्नत है और जो हल्की दाढ़ी हो, जिसमें नज़र आता हो उसके नीचे ठोढ़ी तक धोना फ़र्ज़ है। इसके बाद दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोए, पहले दाहिना हाथ फिर बायां हाथ, फिर सर का और उंगलियों के पिछले हिस्से से गरदन का मसह करना। मसह का तरीक़ा यह है कि पानी से दोनों हाथों को तर कर के सब उंगलियां बराबर मिलाकर पेशानी के बालों पर रख कर गुद्दी तक ले जाए, फिर गुद्दी से लेकर दोनों हाथों की हथेलियों को इस तरह सामने की तरफ़ वापस लाए कि कानों से लेकर सर के बीच तक जो हिस्सा दाएँ-बाएँ बाक़ी रह गया हो, उसका मसह होता चला जाए, उसके साथ ही कानों का मसह इस तरह करे कि कानों के दोनों सूराख़ों में शहादत की उंगलियां डाल कर अंगूठों से कानों के पिछले हिस्से पर मसह करे। मसह सिर्फ़ एक ही

बार करना चाहिए, इसके बाद दायां पांव टख़नों तक तीन बार धो
फिर इसी तरह बायां पांव तीन बार धोए।

वुज़ू की दुआएं

★ जब वुज़ू शुरू करना हो तो नीयत करे और पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ
اَلْاِسْلَامُ حَقٌّ وَّالْكُفْرُ بَاطِلٌ اَلْاِسْلَامُ نُوْرٌ وَّالْكُفْرُ ظُلْمَةٌ ؕ

बिस्मिल्लाहिल अ़ज़ीमि वलहम्दु लिल्लाहि अ़ला दीनिल इस्लामि
अलइस्लामु हक़्क़ुँ वल कुफ़्रु बातिलुन अलइस्लामु नूरुँ वल्कुफ़्रु
ज़ुलमह ●

★ मिसवाक करने की दुआ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ نِسْوِيْكِيْ هٰذَا
مُجِيْضًا لِّدُنُوْبِيْ وَمَرْضَاةً لَّكَ يَا سَيِّدِيْ وَبَيِّضْ بِهٖ
وَجْهِيْ كَمَا بَيَّضْتَ بِهٖ اَسْنَانِيْ ؕ

अल्लाहुम्मजअ़ल निस्वीकी हाज़ा मुहीसल लिज़ुनूबी व मरज़ातल ल
क या सय्यदी व बय्यिज़ बिही वज्ही कमा बय्यज़ त बिही असनानी●

★ कुल्ली करते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ وَذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

अल्लाहुम्म अअ़िन्नी अ़ला तिलावतिल क़ुरआनि व ज़िक्रि क
शुक्रि क व हुस्नि अ़िबा द तिक ●

★ नाक में पानी डालते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَرِحْنِيْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَلَا تُرِحْنِيْ رَائِحَةَ النَّارِ ؕ

अल्लाहुम्म अरिहनी राए हतल जन्नति व ला तुरिह्नी राए हतन्नार

★ मुंह धोते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ بَيِّضْ وَجْهِيْ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ؕ

अल्लाहुम्म बय्यिज़ वज्ही यौ म तब्यज़्ज़ु वु जू हुंव व तस्वद्दु
वुजूह●

★ दाहिना हाथ धोते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ كِتَابِيْ بِيَمِيْنِيْ وَحَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَّسِيْرًا ؕ

अल्लाहुम्म अअ़ तिनी किताबी बि यमीनी व हासिबनी हिसाबयँ
यसीरा ●

★ बायां हाथ धोते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَا تُعْطِنِيْ كِتَابِيْ بِشِمَالِيْ وَلَا مِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِيْ ؕ

अल्लाहुम्म ला तुअ़ तिनी किताबी बिशिमाली वला मिवँ वरा इ
ज़हरी●

★ सर का मसह करते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِيْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ ؕ

अल्लाहुम्म अ ज़िल्लनी तह त ज़िल्लि अ़र्शि क यौ म ला ज़िल्ल इल्ला
ज़िल्ल अ़र्शिक ●

★ कानों का मसह करते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ

अल्लाहुम्मज अ़लनी मिनल्लज़ी न यसतमिऊ नल क़ौ ल- फ़ यत्तबिऊ
न अह सनह— ●

★ गरदन का मसह करते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَعْتِقْ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ ؕ

अल्लाहुम्म अअ तिक रक़बती मिनन्नार ●

★ सीधा पाँव धोते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِيْ عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامِ ÷

अल्लाहुम्म सब्बित क़ दमी अलस्सिराति यौ म तज़िल्लुल अक़दाम ●

★ उल्टा पाँव धोते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ ذَنْبِيْ مَغْفُوْرًا وَّسَعْيِيْ مَشْكُوْرًا وَّتِجَارَتِيْ لَنْ تَبُوْرَ ÷

अल्लाहुम्मजअल ज़न्बी मग़्फ़ूरवँ व स अ़ि मश्कूरवँ व तिजा र ती लन तबूर ●

वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद खड़े होकर और आसमान की तरफ़ मुँह उठाकर कलिमए शहादत पढ़े, फिर कहे :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ÷

अल्लाहुम्मज अ़लनी मिनत्तौवाबी न वजअ़लनी मिनल मु त तह हरीन ●

★ और यह भी पढ़े سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ

بِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ÷

सुब्हा न क अल्लाहुम्म व बिहम्दि क अश्हदु अल्लाइला ह इल्ला अन त अस्तग़फ़िरु क व अतूबु इलैक ●

★ नमाज़ तहीयतुल वुज़ू की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ تَحِيَّةُ الْوُضُوْءِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नवैतु अन उसल्लि य लिल्लाहि तआला र क अ़ती सलाति तहैयतुल वज़ू उ - मु त वज्जेहन इला जे हतिल कअ़ बतिश् शरीफ़ति अल्लाहु अकबर ●

तयम्मुम का बयान

जिसको वुज़ू या ग़ुस्ल करने की ज़रूरत हो और पानी न मिले या पानी तो हो, लेकिन उसके इस्तेमाल से बीमारी बढ़ने या बीमारी हो जाने का बड़ा डर हो या रस्सी-डोल यानी कुएँ से पानी निकालने का सामान मौजूद न हो या दुश्मन का डर हो या सफ़र में पानी एक मील के फ़ासले पर हो, तो इन सब शक्लों में वुज़ू और ग़ुस्ल की जगह तयम्मुम करे।

तयम्मुम का तरीक़ा

तयम्मुम में नीयत फ़र्ज़ है यानी नीयत करे कि मैं ना-पाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मुम करता हूं, नीयत के बाद दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे, फिर हाथ झाड़ कर तमाम मुंह पर मले और जितना हिस्सा मुंह का वुज़ू में धोया जाता है उतने हिस्से पर हाथ पहुँचाए, फिर दोबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथ को कुहनियों तक मले और उंगलियों का ख़िलाल भी करे।

वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क़ नहीं, जितनी पाकी वुज़ू और ग़ुस्ल से होती है, उतनी ही तयम्मुम से भी होती है। अगर बीस साल तक भी पानी न मिले तो तयम्मुम ही करता रहे।

तंबीह पत्थर पर तयम्मुम जायज़ है, चाहे उस पर मिट्टी या धूल न हो, लेकिन कपड़े पर जायज़ नहीं। कुछ आदमी रेल में सफ़र करते हुए पानी न मिलने पर अपनी चादर पर तयम्मुम कर लेते हैं, यह जायज़ नहीं।

तयम्मुम तोड़ने वाली चीज़ें

जो चीज़ें वुज़ू को तोड़ देती हैं, उनसे तयम्मुम भी टूट जाता है, पानी

का मिलना और उसके इस्तेमाल पर क़ुदरत होना भी तयम्मुम को तोड़ देता है।

मस्अला अगर किसी का वुज़ू भी नहीं और ग़ुस्ल भी नहीं है, तो एक ही तयम्मुम काफ़ी है। वुज़ू और ग़ुस्ल की नीयत करके अलग अलग दो बार तयम्मुम करना ज़रूरी नहीं।

तयम्मुम की नीयत

पहले बिस्मिल्लाह पढ़े फिर कहे :

نَوَيْتُ اَنْ اَتَيَمَّمَ تَقَرُّبًا اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى

नवैतु अन अ त यम्म म तक़र्रु बन इलल्लाहि तआ़ला ●

ग़ुस्ल का बयान

इन चीज़ों से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है–

१. जागते में शहवत से मनी निकलना,
२. सोहबत करना (अगरचे मनी न निकले),
३. हैज़ ख़त्म होना,
४. निफ़ास बन्द होना।

फ़ायदा हैज़ उस ख़ून को कहते हैं, जो औरतों को हर माह आता है और निफ़ास वह ख़ून है, जो बच्चा पैदा होने के बाद आता है।

ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं–

१. ख़ूब हलक़ तक पानी से मुंह भर कर कुल्ली करना,
२. नाक में पानी चढ़ाना, जहां तक नर्म जगह है,
३. तमाम बदन पर एक बार पानी बहाना।

ग़ुस्ल की सुन्नतें

१. पाक होने की नीयत करना २. पहले ज़ाहिरी ना-पाकी को दूर करना और इस्तिंजा करना ३. फिर वुज़ू करना ४. सारे बदन पर तीन बार पानी बहाना ५. बदन को अच्छी तरह मलना।

ग़ुस्ल का मस्नून तरीक़ा

जब ग़ुस्ल करने का इरादा हो तो पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोए फिर इस्तिंजा करे और अगर ज़ाहिरी ना-पाकी किसी जगह लगी है तो उसे धो डाले फिर वुज़ू करे, जैसे नमाज़ के लिए वुज़ू करते हैं। ख़ूब मुंह भर कर कुल्ली करे, रोज़ा न हो तो ग़रारा भी करे और नाक में ख़ूब ख़्याल करके पानी चढ़ावे। अगर पत्थर या पक्की ज़मीन पर ग़ुस्ल करे तो दोनों पांव भी उसी वुज़ू में धो ले, वुज़ू के बाद थोड़ा-सा पानी लेकर सारे बदन को मले, फिर तीन बार सर पर पानी डाले और इसके बाद दाहिने कंधे पर, फिर बाएं कंधे पर तीन-तीन बार पानी डाले और हर जगह पानी पहुंचाए, बाल बराबर भी कोई जगह सूखी रह जाएगी तो ग़ुस्ल न होगा, फिर उस जगह से हट जाए और पांव धो ले। अगर वुज़ू के वक़्त पांव धो लिए थे, तो अब पांव धोने की ज़रूरत नहीं।

मस्अला अगर ग़ुस्ल के बाद याद आए कि फ़्लां जगह पानी न पहुंचाया था, तो फिर से पूरा ग़ुस्ल करना ज़रूरी नहीं, बल्कि ख़ास उसी जगह को धो ले। अगर कुल्ली करना या नाक में पानी डालना भूल गया तो ख़ास कमी को पूरा करने से ग़ुस्ल पुरा हो जाएगा।

मस्अला ग़ुस्ल करते वक़्त जो वुज़ू किया है, उससे नमाज़ पढ़ सकते हैं। यानी दुबारा अलग से वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

जुमआ़ का ग़ुस्ल

जुमा के दिन नमाज़ से पहले ग़ुस्ल करना सुन्नत है। हदीस शरीफ़ में इसकी बड़ी तर्ग़ीब व ताकीद आयी है।

अज़ान

फ़र्ज़ नमाज़ों से क़ब्ल अज़ान पुकारना शिआरे इस्लाम में दाख़िल और सुन्नते मुअक्किदा है। जो शख़्स अज़ान दे उसे चाहिए कि ऊँची जगह पर खड़े होकर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके शहादत की उंगलियों को दोनों कानों में डालकर बलन्द आवाज़ से अज़ान के यह कलिमात कहे।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ○
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ○ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○
حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ○ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ○
حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ○ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ○
اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ ○ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ○

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह्
अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह्
अश्हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह्
अश्हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह्
हय्यॅ अ़लस्सला हय्यॅ अ़लस्सला
हय्यॅ अ़लल फ़लाह हय्यॅ अ़लल फ़लाह
अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
ला इला ह इल्लल्लाह।

फ़ज्र की अज़ान में दोनों *हय्यॅ अ़लल फ़लाह* के बाद दो बार कहे

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ○ اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ○
अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन नौम *अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन नौम*

इक़ामत यानी जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो दोनों *हय्यॅ अ़लल फ़लाह* के बाद दो बार कहे

قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ ○ قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ ○
क़द क़ामतिस्सलाह *क़द क़ामतिस्सलाह*

और इक़ामत सुनने वाले कहें

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا
अक़ा महुल्लाहु व अदामहा *अक़ा महुल्लाहु व अदामहा*

अज़ान का जवाब

जब अज़ान सुने तो अज़ान के जवाब देने का हुक्म है और अज़ान के जवाब देने का तरीक़ा यह है कि अज़ान कहने वाला जो कलिमा कहे, सुनने वाला भी वही कलिमा कहे मगर *हय्यॅ अ़लस्सला* और *हय्यॅ अ़लल फ़लाह* के जवाब में لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ *ला हौ ल व ला क़ुव् व त इल्ला बिल्लाह* कहे और फ़ज्र की अज़ान में اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ *अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन नौम* के जवाब में कहे صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ *सदक़ त व बरर त*

अज़ान के बाद की दुआ

دعا بعد اذان اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ
وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ

وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ
مَقَامًا مَّحْمُوْدَ ِالَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا
شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَاتُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद् दअ़ व तित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाए म ति आति मुहम्म द निल वसी ल त वल फ़ज़ी ल त वद्द र जतर रफ़ी अ़ त ववअ़स्हु मक़ाममम्हमू द निल्लज़ी व अ़त्तहू वर- ज़ुक़ना शफ़ा अ़ त हू यौमल क़ियामति इन्न क ला तुख़लिफ़ुल मीआ़द ○

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

पहले दाहिना पैर रखे और पढ़े :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

❑ अल्लाहुम्मफ़तहली अबवा ब रह्मतिक ❑

मस्जिद में दाख़िल होकर एतिकाफ़ की नीयत करले जब तक मस्जिद में रहेगा सवाब पाता रहेगा।

एतिकाफ़ की नीयत

بِسْمِ اللّٰهِ دَخَلْتُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَنَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ

बिस्मिल्लाहि दख़ल्तु व अ़लैहि तवक्कल्तु व नवैतु सुन्नतुल एतिकाफ़○

मस्जिद से निकलने की दुआ

पहले बायाँ पैर बाहर निकाले और पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

❑ अल्लाहुम्-म इन्नी अस् अलु क मिन फ़ज़्लिक ❑

दो रकअत सुन्नत दुख़ूलुल मस्जिद की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّىَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَىْ صَلٰوةَ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन उसल्लि य लिल्लाहि तआ़ला रक्अ़ति सला त दुख़ूलिल मस्जिदि सुन्नति रसूलिल्लाहि तआ़ला मु त वज्जिहन एला जिहतिल कअ़ बतिश शरीफ़ति अल्लाहु अकबर ○

तंबीह मस्जिद में दुनिया की बातें करना, बदबूदार चीज़ें (जैसे प्याज़ लहसुन वग़ैरा) खा पी कर या सिग्रेट बीड़ी के इस्तेमाल के बाद (बदबू ख़त्म होने से पहले) मस्जिद में आना सख़्त मना है।

मुतफ़र्रिक़ मस्अले

मस्अला बे-वुज़ू क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना दुरुस्त है, मगर छूना दुरुस्त नहीं और जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उसके लिए न क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने की इजाज़त है, न छूने की। हां, अगर जुज़्दान के साथ छूए तो छू सकता है और उसका मस्जिद में दाख़िल होना भी दुरुस्त है।

मस्अला हैज़ व निफ़ास वाली औरत और जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो, क़ुरआन शरीफ़ के अलावा दुआ व ज़िक्र और तस्बीह पढ़ सकती है।

मस्अला हैज़ व निफ़ास वाली औरत न रोज़ा रख सकती है, न ही नमाज़ पढ़ सकती है। पाक होने के बाद भी उसको उस ज़माने की नमाज़ों का दोहराना ज़रूरी नहीं है। हां, अगर इस ज़माने में रमज़ान शरीफ़ के रोज़े आ गये हों तो पाक होने के बाद उनकी क़ज़ा रखना ज़रूरी है।

मस्अला जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो, खा-पी सकता है और चल-फिर सकता है और सो भी सकता है, हां, जितनी जल्द ग़ुस्ल कर ले बेहतर है।

मस्अला जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो, खाने और सोने के लिए अगर वुज़ू कर ले तो मुस्तहब है।

नमाज़ के वक़्तों और रक़्अतों का बयान

१. फ़ज्र का वक़्त सुबहे सादिक़ से शुरू होकर सूरज निकलने तक बाक़ी रहता है– फ़ज्र की नमाज़ कुल ४ रकअत है– २ सुन्नत और २ फ़र्ज़।

२. ज़ुहर का वक़्त सूरज ढल जाने के बाद से शुरू होता है। जब तक हर चीज़ का साया उससे दोगुना न हो उसका वक़्त बाक़ी रहता है। दो गुने साए से मुराद असली साए के अलावा है। असली साया वह है जो ठीक ज़वाल के वक़्त होता है। यह नमाज़ १२ रकअत है – ४ सुन्नत – ४ फ़र्ज़ – २ सुन्नत – २ नफ़्ल।

३. ज़ुहर का वक़्त ख़त्म होने के बाद अस्र का वक़्त शुरू हो जाता है और सूरज छिपने तक बाक़ी रहता है, लेकिन जब सूरज पीला हो जाए, तो अस्र का वक़्त मक्रूह हो जाता है। अस्र में ४ सुन्नत और ४ फ़र्ज़ – कुल ८ रकआत हैं।

४. जब सूरज छिप जाए तो मग़रिब का वक़्त शुरू हो जाता है जो सफ़ेद लाली ग़ायब होने तक रहता है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के इलाक़ों में कम से कम सवा घंटे और ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ घंटे तक मग़रिब का वक़्त रहता है। मग़रिब में पहले ३ फ़र्ज़ फिर – २ सुन्नत और २ नफ़्ल कुल ७ रकअतें हैं।

५. मग़रिब का वक़्त ख़त्म होते ही इशा का वक़्त शुरू हो जाता है जो सुबहे सादिक़ होने तक रहता है, लेकिन आधी रात के बाद इशा का वक़्त मक्रूह हो जाता है। इशा की नमाज़ १७ रकअत है– ४ सुन्नत - ४ फ़र्ज़ – २ सुन्नत - २ नफ़्ल - ३ वित्र और २ नफ़्ल।

मस्अला जो वक़्त इशा का है, वही वक़्त वित्र की नमाज़ का भी

है, मगर वित्र की नमाज़ इशा के फ़र्ज़ों से पहले नहीं पढ़ी जा सकती।

नमाज़ के फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, मुफ़्सिदात और मक्रूहात

शराइते नमाज़ और फ़राइज़े नमाज़

नमाज़ के चौदह फ़र्ज़ हैं जिनमें से कुछ ऐसे हैं जिनका नमाज़ से पहले होना ज़रूरी है, इनको नमाज़ के बाहरी फ़र्ज़ कहते हैं और इन्हें नमाज़ की शर्तें भी कहा जाता है और कुछ फ़र्ज़ ऐसे हैं जो नमाज़ में दाख़िल हैं। सब की फ़ेहरिस्त यह है—

१. बदन का पाक होना २. कपड़ों का पाक होना ३. सतरे औरत यानी मर्दों को नाफ़ से घुटने तक और औरतों के चेहरे, हथेलियों और क़दमों के अलावा तमाम बदन का ढकना फ़र्ज़ है ४. नमाज़ की जगह का पाक होना ५. नमाज़ का वक़्त होना ६. क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करना ७. नमाज़ की नीयत करना ८. तक्बीरे तहरीमा ९. क़ियाम यानी खड़ा होना १०. क़िरअत यानी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरः पढ़ना ११. रुकूअ करना १२. सज्दा करना १३. आख़री क़ादा १४. अपने इरादे से नमाज़ ख़त्म करना।

अगर इनमें से कोई चीज़ जानकर या भूलकर रह जाए तो सज्दा सह्व करने से भी नमाज़ न होगी। दुबारा नमाज़ पढ़ना होगी।

नमाज़ के वाजिब

१. अल्हम्दु पढ़ना २. और इसके साथ कोई सूरः मिलाना ३. फ़र्ज़ों की पहली दो रक्अतों में क़िर्अत करना ४. अल-हम्दु को सूरः से पहले पढ़ना ५. रुकूअ कर के सीधा खड़ा होना ६. दोनों सज्दों के दर्मियान बैठना ७. पहला क़ादा करना ८. अत्तहीयात पढ़ना ९. लफ़्ज़ सलाम से नमाज़ ख़त्म करना १०. ज़ुहर व अस्र में क़िरअत धीरे से पढ़ना ११. इमाम के लिए

मग़रिब व इशा की पहली दो रक्अतों में और फ़ज्र व जुमआ व ईदैन और तरावीह की सब रक्अतों में आवाज़ के साथ क़िरअत करना **१२.** वित्र में दुआए-क़ुनूत पढ़ना **१३.** दोनों ईदों में छः तक्बीर ज़्यादा करना।

मस्अला वाजिब में से अगर कोई वाजिब भूलकर छूट जाए तो सज्दा सह्व करना वाजिब होगा। अगर जानते-बूझते किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है। सज्दा सह्व से भी काम न चलेगा।

नमाज़ ख़राब करने वाली चीज़ें यानी मुफ़्सिदाते नमाज़

इन चीज़ों के करने से नमाज़ ख़राब हो जाती है।

- बात करना, चाहे थोड़ी हो या बहुत, जान-बूझ कर हो या भूलकर।
- ज़ुबान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना।
- छींकने वाले के जवाब में 'यर्हमुकल्लाह' कहना।
- रंज की ख़बर सुनकर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन' पूरा या थोड़ा-सा पढ़ना।
- अच्छी ख़बर सुनकर 'अल-हम्दु लिल्लाह' कहना।
- अजीब चीज़ सुनकर 'सुब्हानल्लाह' कहना।
- दुख-तक्लीफ़ की वजह से 'आह' और 'ओह' या 'उफ़' करना।
- अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देना।
- क़ुरआन शरीफ़ देखकर पढ़ना।
- 'अल-हम्दु शरीफ़ या सूरः में ऐसी ग़लती करना, जिससे नमाज़ ख़राब हो जाती है, (जिस की तफ़्सील बड़ी किताबों में लिखी है)
- अमले कसीर, यानी ऐसा काम करना, जिससे देखने वाला यह समझे कि यह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है, मस्लन दोनों हाथ से काम करना।

- जान-बूझकर या भूलकर कुछ खाना-पीना।
- क़िब्ले से सीना फिर जाना।
- दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुरूफ़ निकल जाएं।
- नमाज़ में हंसना।
- इमाम से आगे बढ़ जाना।

नमाज़ की सुन्नतें

१. तक्बीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना।
२. मर्दों को नाफ़ के नीचे और औरतों को सीने पर हाथ बांधना।
३. सना यानी 'सुब्हा-न-कल्लाहुम-म' आख़िर तक पढ़ना।
४. 'अऊ़ज़ु बिल्लाह' (पूरी) और 'बिस्मिल्लाह' (पूरी) पढ़ना।
५. रुकूअ़ और सज्दा करते वक़्त, बल्कि हर एक रुक्न से दूसरे रुक्न में मुंतक़िल होने के वक़्त अल्लाहु अकबर कहना।
६. रुकूअ़ से उठते वक़्त 'समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह' और 'रब्बना लकल हम्द' कहना।
७. रुकूअ़ में 'सुब्हा न रब्बियल अ़ज़ीम' कम से कम तीन बार कहना और सज्दे में कम से कम तीन बार 'सुब्हा-न रब्बियल अअ़ला' कहना।
८. दोनों सज्दों के दर्मियान और अत्तहीयात के लिए औरतों को बाएं पांव सीधी तरफ़ निकाल कर कुल्हों पर बैठना।
९. दरूद शरीफ़ पढ़ना।
१०. दरूद के बाद दुआ (दुआए मासूरः) पढ़ना।
११. सलाम के वक़्त दाएं-बाएं मुंह फेरना।
१२. सलाम करने में यह नियत रखे कि मैं फ़रिश्तों, मुक़्तदियों और नेक जिन्नात जो हाज़िर हैं, उनको सलाम कर रहा हूं और अगर मुक़्तदी हो तो इमाम की भी नीयत करे।

नमाज़ की मुस्तहब चीज़ें

- अगर चादर ओढ़े हो तो कानों तक हाथ उठाने के लिए मर्द को चादर से हाथ निकालना।
- जहां तक मुम्किन हो, खांसी को रोकना।
- जम्हाई आए तो मुंह बन्द करना।
- खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह और रुकूअ में क़दमों पर और सज्दे में नाक पर और बैठे हुए गोद में और सलाम के वक़्त कंधे पर नज़र रखना।

नमाज़ की मकरूह चीज़ें

१. कोख पर हाथ रखना २. आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना ३. कपड़ा समेटना ४. जिस्म या कपड़े से खेलना ५. उंगलियां चटख़ाना ६. दाएं-बाएं गरदन मोड़ना ७. मर्द का जूड़ा गूंध कर नमाज़ पढ़ना ८. अंगड़ाई लेना ९. कुत्ते की तरह बैठना १०. मर्द को सज्दे में हाथ ज़मीन पर बिछाना ११. सज्दे में (मर्दों के लिए) पेट को रानों से मिलाना १२. बग़ैर उज़्र के चार ज़ानू (आलती-पालती मार कर) बैठना १३. इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना १४. सफ़ से अलाहिदा अकेले खड़ा होना १५. सामने या सर पर तस्वीर होना १६. तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना १७. कंधों पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना १८. पेशाब-पाख़ाना या ज़्यादा भूख का तक़ाज़ा होते हुए नमाज़ पढ़ना १९. सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना २०. आंखें बन्द कर के नमाज़ पढ़ना।

बहुत ज़रूरी मस्अला

बहुत-से अनजाने लोग मस्जिद में आकर इमाम को रुकूअ में पाते हैं, तो जल्दी के ख़्याल से आते ही झुक जाते हैं और इसी हालत में तक्बीरे तहरीमा कहते हैं। उनकी नमाज़ नहीं होती, इसलिए कि

तक्बीरे तहरीमा नमाज़ के सही होने के लिए शर्त है और तक्बीरे तहरीमा के लिए शर्त क़ियाम है। जब क़ियाम न किया तो तक्बीरे तहरीमा सही न हुई और जब वह सही न हुई तो नमाज़ भी सही न होगी।

इक़ामत या तक्बीर

जब जमाअत की नमाज़ खड़ी होती है तो पहले तक्बीर कहते हैं, वह भी अज़ान ही की तरह है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि 'हय-य अ़लल फ़लाह' के बाद इक़ामत में दो बार 'क़द क़ामतिस्सलाः' कहा जाता है।

मस्अला अज़ान ठहर-ठहर कर और इक़ामत (तक्बीर) जल्दी-जल्दी कहे।

मस्अला बे-वुज़ू अज़ान देना जायज़ है, लेकिन वुज़ू के साथ अफ़ज़ल है।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करे तो पहले अपना बदन हर तरह से पाक-व-साफ़ करे और पाक कपड़े पहन कर पाक जगह पर क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके खड़े हो, फिर जो नमाज़ पढ़नी है, उसकी नीयत करे, फिर दोनों हाथ इस तरह कानों तक उठाए कि अंगूठे कानों की लौ के सामने हों, उंगलियां खुली रहें। इसके बाद तक्बीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कह कर दोनों हाथ नाफ़ के नीचे इस तरह बांधे कि सीधे हाथ की हथेली बाएं हाथ की हथेली के पिछले हिस्से पर रहे और अंगूठे और छंगुलिया के हल्क़े से बाएं हाथ के पहुँचे को पकड़ ले और बाक़ी तीन उंगलियां कलाई पर बिछी रहें और नज़र सज्दे की जगह पर रहे, हाथ बांध कर सना तअ़व्वुज़-तस्मीयह और सूरतुल फ़ातिहा पढ़े।

सना سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ○

सुबहा न क अल्लाहुम्म व विहम्दि क व तबारकस्मु क व तआ़ल जद्दु क व लाइला ह ग़ैरुक ●

तअ़व्वुज़ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

अ़ऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर रजीम ●

तस्मीयह بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

सूरतुल फ़ातिहा

(१) سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ (٥)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿٤﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٦﴾

● *बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम* ●

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन ● *अर्रहमानिर रहीम* ● *मालिकि यौमिद्दीन* ● *ई या क नअ़ बुदु व ई या क नस त ईन* ● *इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम* ● *सिरातल्लज़ी न अनअ़म त अलैहिम ग़ैरिल मग़्दूबि अ़लैहिम वलद्दाल्लीन* ● *(आमीन)*

सूरतुल फ़ातिहा के बाद धीरे से आमीन कहे और क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरः या कम से कम तीन छोटी आयतें या इनके बराबर की एक बड़ी आयत पढ़े, —यहां चन्द सूरतें लिखी जाती हैं।

सूरतुन नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿٤﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

● *बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम* ●

● *क़ुल अ़ऊ़ज़ु बिरब्बिन नास* ● *मलेकिन नास* ● *इलाहिन्नास* ● *मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास* ● *अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास* ● *मिनल जिन्नति वन्नास* ●

सूरतुल फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿٢﴾ وَ

مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي
الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल फ़लक़ • मिन शर्रि मा ख़लक़ • व मिनशर्रि ग़ासिक़िन इ़ज़ा वक़ब • व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उ़क़द • व मिन शर्रि हासिदिन इ़ज़ा हसद •

सूरतुल इ़ख़लास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• क़ुलहुवल्लाहु अहद • अल्लाहुस्समद • लम यलिद • व लम यूलद • वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद •

सूरतुल लहब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا
كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• तब्बत यदा अबी ल ह विवँ व तब्ब • मा अग़ना अ़नहु मालुहू व मा कसब • स यस्ला नारन ज़ा त ल ह विवँ • वम र अ तुह'हम्मा लतल ह त़ब • फ़ी जीदिहा हब्लुम मिम्मसद •

सूरतुन नस्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ
يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• इ़ज़ा जा अ नसरुल्लाहि वल फ़त्हु • व र अ़ैतन्ना स यद ख़ुलु न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा • फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बि क वस्तग़फ़िरहु' इन्नहू का न तौवाबा •

सूरतुल काफ़िरून

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• कुल या अय्युहल काफ़िरून • ला अअ्बुदु मा तअ़बुदून • व
अनतुम आ़बिदू न मा अअ़बुद • वला अना आ़बिदुम मा अ़ब
• वला अनतुम आ़बिदू न मा अअ़बुद • लकुम दीनुकुम व
यदीन •

सूरतुल कौसर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• इन्ना अअ़्तैना कल कौसर • फ़सल्लि लिरब्बि क वनहर • इ
शानि अ क हुवल अब्तर •

सूरतुल माऊन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ
الْيَتِيْمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ
لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• अ र ऐ तल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन • फ़ ज़ालिकल्लज़ी यदुअ़-
अुल् यतीम • व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल मिस्कीन • फ़वैलुल्-
लिल्मुसल्लीन • अल्लज़ी-न हुम अ़न सलातिहिम साहून • अल्लज़ी-
न हुम युराऊ-न • व यम नअूनल माअून •

सूरतुल क़ुरैश

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِىْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ
جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• लि-ईलाफ़ि क़ुरैशिन • ईलाफ़िहिम रिह-ल-तश-शिताइ वस्सैफ़
• फ़लयअ़्-बुदु रब्-ब हाज़ल बैत • अल्लज़ी अत़्-अ़-महुम मिन
जूअिंव व आ-म-नहुम मिन ख़ौफ़ •

सूरतुल-फ़ील

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ
كَيْدَهُمْ فِىْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

رَمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• अ-लम त-र कै-फ़ फ़-अ-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिलफ़ील • अ-लम यजअल कैदहुम फ़ी तज़लीलिंव • व अर्स-ल अलैहि तैरन अबाबील • तर्मीहिम बिहिजा-रतिम मिन सिज्जील • फ़-ज-अ-लहुम क-अ़स्फ़िम मअ़-कूल •

सूरतुल हु-म-ज़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ

نَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَآ

دْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ

عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• वैलुल्लिकुल्लि हु-म-ज़तिल लु-म-ज़: • अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव व अ़द्-द-दह • यहसबु अन्-न मालहू अ़ख़-ल-दह • कल्ला लयुम्बज़न न फ़िल-हु-त़ मह • व मा अदरा-क मलहु-त़ मह • नारुल्लाहिल मू क़ दतु- • ल्लती तत़लिअु अ़लल अफ़-इदह • इन्नहा अ़लैहिम मुअ़ स-दह • फ़ी अ़-म-दिम मुमद्-द-दह •

सूरतुल अस्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

• बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• वल्अस्रि • इन्नल-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र • इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व त-वासौ बिल्हक्कि • व त-वासौ बिस्सब्र •

मिसाल के तौर पर चन्द सूरतें दी गई हैं। इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ की कोई सी भी एक सूरः या एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें पढ़ी जा सकती हैं। इसके बाद اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अकबर कहता हुआ रुकू में जाए और ३, ५, या ७ बार कहे سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ सुब्हा न रब्बियल अज़ीम। फिर سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए। अकेला नमाज़ पढ़ रहा हो तो यह भी पढ़े رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ रब्बना लकल हम्द। फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में चला जाए और ३, ५ या ७ बार कहे سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى सुबहा न रब्बियल अअ़ला, इसके बाद अल्लाहु अकबर कहता हुआ बैठे। फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ दूसरा सज्दा करे। पहले सज्दे की तरह तस्बीह पढ़कर अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए। इस तरह एक रक्अत नमाज़ पूरी हो गई। दूसरी रक्अत में बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़कर सूरतुल फ़ातिहा पढ़े और पहली रकअत की तरह बाक़ी अरकान पूरे करे और बैठ कर **तशह्हुद** पढ़े :

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ
وَالطَّيِّبٰتُ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ
اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ
الصّٰلِحِيْنَ ○ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्स ल वातु वत्तय्यिवातु अस्सलामु अलै क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब र कातुहू अस्सलामु अलैना व अला अिबादिल्लाहिस सालिहीन अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह ●

तशह्हुद के बाद- दरूद शरीफ़ और दुआए मासूरः पढ़ी जाती है लेकिन अगर दो से ज़्यादा रक्अतें नमाज़ पढ़ रहा हो तो तशह्हुद पढ़कर खड़ा हो जाए और इसी तरतीब से बाक़ी की नमाज़ पूरी करके आख़री रकअत में बैठकर पहले - तशह्हुद - फिर दरूद शरीफ़ और दुआए मासूरः पढ़े।

दरूद शरीफ़

درود شریف اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ
مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ
عَلٰٓى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى
اِبْرٰهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिवँ व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन्न क हमीदुम्मजीद ● *अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिवँ व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन्न क हमीदुम मजीद* ● अब पढ़े–

दुआए मासूरः

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا
كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ
فَاغْفِرْلِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुलमन कसीरँव-वला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-व इल्ला अन-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़ि-र-तम मिन अिन्दि-क वर्हमनी इन-न क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम●

○ *दरूद शरीफ़ के बाद की एक दुआए मासूरः यह भी है– कोई एक पढ़ ले।*○

دعاء رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ
وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○

○ रब्बिज्-अल नी मुक़ी मस्सलाति व मिन ज़ुर्रीयती रब-बना व तक़ब्बल दुआ ○ रब्बनाग़्फ़िर ली व लिवालिदय-य व लिल मुअ् मि नी-न यौ-म यक़ूमुल हिसाब●

यहाँ तक पढ़ कर पहले दाएँ फिर बाएँ सलाम कहकर नमाज़ ख़त्म करे।○

○ 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

○ *सलाम कहते वक़्त यह ज़हन में रखे कि मैं फ़रिश्तों, इमाम और*

सारे मुसल्लियों को सलाम कह रहा हूं।

○नमाज़ पढ़ने के बाद जिस क़दर हो सके अल्लाह तआला का ज़िक्र करे और बहुत आजिज़ी से दुआ मांगे। दो दुआएं लिखी जाती हैं

मुनाजात

● नमाज़ के बाद की दुआ ●

हाथ दराज़ करके मांगे اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ
السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا
بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ
رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

★ अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु व इलै क यर्जिअुस्सलामु हय्यिना रब्बना बिस्सलामि व अद्खिल्ना दारस्सलामि तबारक त रब्बना व तआलै-त या ज़ल-जलालि वल् इक्राम●

رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ○

★ रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव वफ़िल आख़िरति ह-स-नतंव वक़िना अ़ज़ाबन्नार ●

वित्र की नमाज़

इशा की नमाज़ में फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद वित्र की नमाज़ पढ़ना वाजिब है। वित्र की तीन रकअतों की पहली दो रकअतें' और सब नमाज़ों की तरह अदा करे। दूसरी रकअत में तशह्हुद यानी अत्तहीयात पढ़ कर खड़ा हो जाए और हाथ बांध ले। तीसरी रकअत में सूरः फ़ातिहा और कोई सी सूरः पढ़कर रुकू में जाने से क़ब्ल अल्लाहु

अकबर कहते हुए दोनों हाथ कानों तक उठाए और बांध ले फिर दुआए क़ुनूत पढ़े :

नमाज़े वित्र की तीसरी रकअत में पढ़ी जानेवाली दुआए क़ुनूत

دعاءِ قنوت اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ
وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ
وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ
اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ
نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ
اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ○

अल्ला हुम् म इन्ना नस्तअि़ नु क व नस्तग़् फ़िरु क व नु' मिनु वि क व न त वक्कलु अ़लै क व नुस्नी अ़लैकल् ख़ैर ● व नश्कुरु क वला नक्फ़ुरु क व नख़्लओ व नत् रुकु मँय्यफ़जुरु क अल्ला हुम्म ईया क नअ़बुदु व ल क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै क नस्आ व नह्फ़िदु व नर्जू रह् म त क व नख़्शा अ़ज़ा ब क इन् न अ़ज़ा ब क बिल् कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़ ●

इस दुआ के बाद रुकु और सज्दे करे फिर अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआए मासूरः पढ़ कर सलाम फेरे।

जुमआ़ की नमाज़

जुमआ़ की नमाज़ फ़र्ज़ है, जबकि ये शर्तें पायी जाएं—

१. मुसाफ़िर न होना २. तन्दुरुस्त होना ३. ग़ुलाम न होना ४. शहर या क़स्बे का होना ५. मर्द होना ६. अक़्ल वाला और बालिग़ होना ७. अंधा-लंगड़ा न होना ८. जुमआ़ के दिन सूरज

का ढल जाना यानी ज़ुहर का वक़्त आ जाना ९. ख़ुत्बा १०. जमाअत यानी इमाम के अलावा कम से कम तीन आदमी जमाअत में हों।

मस्अला *पहली अज़ान से ख़रीदना-बेचना और कारोबार छोड़ कर मस्जिद में आना वाजिब है। जब इमाम ख़ुत्बे के लिए चले, तो सब लोग बिल्कुल ख़ामोश होकर ख़ुत्बा सुनें। ख़ुत्बे के वक़्त बात करना, नमाज़ पढ़ना, दरूद शरीफ़ या तस्बीह या और कुछ पढ़ना, किसी को डांटना, नसीहत करना जायज़ नहीं।*

हज़रत औस बिन औस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने जुमआ के दिन अपनी बीवी को ग़ुस्ल कराया (यानी सोहबत कर के उस पर ग़ुस्ल वाजिब कर दिया और इस तरह अपने नफ़्स और अपनी नज़र को महफ़ूज़ कर लिया) और ख़ुद भी ग़ुस्ल किया और जुमआ के लिए जल्दी चला गया (कि ख़ुत्बे से पहले पहुंच गया) और शुरू से ख़ुत्बा सुना और पैदल गया, सवार न हुआ और इमाम के क़रीब बैठा और ध्यान से ख़ुत्बा सुना और बेकार का काम न किया, न बेकार बात की, तो उसके लिए हर क़दम पर पूरे साल के रोज़ों और साल भर की रातों को नमाज़ में क़ियाम करने का सवाब मिलेगा।

जुमआ की १४ रक्अतें हैं जिनकी तफ़्सील यह है—
चार सुन्नतें, फिर दो फ़र्ज़, फिर चार सुन्नतें, फिर दो सुन्नतें, फिर दो नफ़्ल।

याद रखने वाली बातें

- *वित्र नमाज़ के बाद तीन बार यह दुआ पढ़े :*

❑ *सुब्हानल मलि किल क़ुद्दूस* ❑

तीसरी बार क़दरे बलन्द आवाज़ से कहे और क़ुद्दूस की 'द' को ख़ूब खींचे।

- फ़ज्र और मग़रिब की फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद किसी से बात किये बग़ैर सात बार पढ़े :

❑ *अल्लाहुम-म अजिर्नी मिनन्नार* ❑ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

- फ़र्ज़ नमाज़ का सलाम फेर कर दाहिना हाथ पेशानी पर रख कर पढ़े : بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ ÷

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इला-ह-इल्ला हुवर्रहमानुर्रहीम अल्लाहुम-म अज़्हब अन्निल हम-म वल-हुज़्न-न ●

कुछ क़िर्अत के बारे में

मस्अला फ़र्ज़ों की सिर्फ़ पहली और दूसरी रक्अत में अल्हम्दु शरीफ़ के बाद कोई सूरः या उसकी जगह कुछ आयतें पढ़ी जाती हैं और तीसरी और चौथी रक्अत में सिर्फ़ अल-हम्दु शरीफ़ पढ़ी जाती है। सुन्नत, नफ़्ल या वित्र पढ़ने हों, तो हर रक्अत में अल्हम्दु शरीफ़ के साथ कोई सूरः या कुछ आयतें मिलाएं।

मस्अला नमाज़ों में क़ुरआन शरीफ़ उलटी तरतीब से पढ़ना मकरूहे तहरीमी है जैसे पहली रकअत में क़ुल हुवल्लाह और दूसरी में *तब्बत यदा* पढ़ना।

मस्अला यह भी दुरुस्त नहीं कि पहली रकअत में छोटी सूरः और दूसरी में बड़ी सूरः पढ़ी जाए जैसे पहले क़ुल हुवल्लाह फिर क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़।

कुछ नमाज़ के बारे में

जमाअत की अहमियत

जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की बड़ी ताकीद आई है—

फ़र्ज़ नमाज़े जमाअत के साथ ही अदा करनी चाहियें। इसकी बड़ी फ़ज़ीलत और बहुत सवाब है। हदीस शरीफ़ में है कि बा जमाअत नमाज़ का सवाब २७ गुना ज़्यादा है, और हर हालत में तनहा नमाज़ पढ़ने से बाजमाअत नमाज़ पढ़ना बेहतर है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी जमाअत तर्क नहीं की— बाज़ आलिमों ने जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने को वाजिब कहा है। पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना तो और भी अफ़ज़ल है— यह सफ़े ऊला है और तकबीरे ऊला यह है कि इमाम की क़िर्अत से पहले नमाज़ की नीयत करके हाथ बाँध लिये जाएँ। तकबीरे ऊला के छूट जाने पर मलाल करना चाहिये।

- बग़ैर उज़्र के जमाअत छोड़ने वाला गुनहगार और जमाअत छोड़ने की आदत डालने वाला फ़ासिक़ है।
- जुमआ और ईदैन की नमाज़ बग़ैर जमाअत' नहीं होती।
- रमज़ान में नमाज़े तरावीह की जमाअत सुन्नते किफ़ाया है यानी एलाक़ा के चन्द लोगों के अदा कर लेने से सारे लोग बरिउज़्ज़िम्मा हो गए वरना सब गुनहगार होंगे— यही हुक्म नमाज़े जनाज़ा का है।
- रमज़ान शरीफ़ में वित्र की नमाज़ बाजमाअत पढ़ना मुस्तहब है।

दुरुस्त सफ़ बंदी

अक्सर लोग जमाअत के आदाब का लेहाज़ नहीं करते— यह बहुत नुक़्सान की बात है। इन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है—

- इमाम के क़रीब या अगली सफ़ों में जाने के लिये पहले से बैठे हुए लोगों को हटा हटा कर या फलांग कर आगे नहीं जाना चाहिये।
- सफ़ में मिलकर-कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों— ख़ाली जगहों में शैतान घुस जाता है।
- सफ़ बराबर रखें— आगे पीछे न खड़े हों— इससे आपस में फूट पड़ती है।

- हमेशा दरमियान यानी बीच से सफ़बंदी करना चाहिये— किनारों से खड़े होना बहुत नुक़्सान की बात है।
- जब तक अगली सफ़ पूरी न हो जाए पीछे सफ़ न बनाएँ।

औक़ाते नमाज़

नमाज़ हमेशा अव्वल वक़्त में पढ़ना चाहिये यानी नमाज़ का वक़्त होते ही नमाज़ की अदाएगी की फ़िक्र करे, ताख़ीर न करे— देर करने से जमाअत छूटेगी— नमाज़ मक्रूह हो सकती है और क़ज़ा होने का ख़दशा रहता है।

क़ज़ा नमाज़ें

नमाज़ क़ज़ा करना बड़े गुनाह की बात है। अगर नमाज़ क़ज़ा हो ही जाए तो उसको जल्द से जल्द अदा कर ले। अगर किसी ने पिछली नमाज़ें क़ज़ा की हों यानी नहीं पढ़ी हों चाहे वह बीस तीस साल की ही क्यों न हों तो सब अदा करे— मुद्दत याद न हो तो यह नीयत करे कि उसके ज़िम्मा जो सबसे अव्वल दिन की नमाज़ (जैसे ज़ुहर या अस्र या दूसरी नमाज़) बाक़ी है— उसको पढ़ता हूँ— मिसाल के तौर पर एक पूरी नीयत इस तरह होगी—

मैं नीयत करता हूँ या करती हूँ चार रअकत नमाज़ फ़र्ज़ ज़ुहर की क़ज़ा जो सबसे अव्वल मेरे ज़िम्मा है— वास्ते अल्लाह तआला के, रुख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

क़ज़ा सिर्फ़ फ़र्ज़ और वित्र नमाज़ों की होती है— सुन्नतों या नफ़्लों की नहीं ●

जो नमाज़ें घर पर क़ज़ा हुई हों वह पूरी पढ़ी जाएंगी चाहे सफ़र में पढ़े (सफ़र कम से कम ४८ मील का होता है) और सफ़र के दौरान क़ज़ा होने वाली ज़ुहर— अस्र और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ों की क़ज़ा दो रकअत करके ही पढ़ी जाएंगी चाहे घर पर पढ़े— फ़ज्र और मग़रिब

की नमाज़ों की क़ज़ा दो और तीन ही रकअत पढ़नी होगी। फ़ज्र की क़ज़ा नमाज़ अगर उसी दिन ज़वाल से पहले पहले पढ़ रहा हो तो सुन्नत और फ़र्ज़ दोनों पढ़े। ●

नमाज़े क़स्र या मुसाफ़िर की नमाज़

जो कोई ४८ मील या सवा सतत्तर किलोमीटर के सफ़र की नीयत से अपने एलाक़े से निकले तो उसपर फ़र्ज़ नमाज़ों की क़स्र ज़रूरी है – और क़स्र यह है कि ज़ुहर, अस्र और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ें दो दो रकअतें करके अदा करे लेकिन अगर मुक़ीम इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो तो चार रकअत ही पढ़े। फ़ज्र और मग़रिब की फ़र्ज़ नमाज़ों की क़स्र नहीं होती। सफ़र में किसी जगह १५ दिन या उससे ज़्यादा ठहरने की नीयत करले तो फिर वह मुसाफ़िर नहीं– उसको तमाम नमाज़ें पूरी पढ़नी होंगी। इशा की ३ रकअत नमाज़े वित्र वाजिब है जो मुक़ीम या मुसाफ़िर सबको पढ़ना लाज़मी है। मुसाफ़िर के लिये सुन्नतों और नफ़्लों की सहूलत है– पढ़ ले तो बहुत ज़्यादा सवाब का मुस्तहिक़ होगा– न पढ़े तो हर्ज नहीं। ●

मरीज़ की नमाज़

नमाज़ इसलाम का बहुत बड़ा फ़रीज़ा है और किसी भी हालत में माफ़ी नहीं– चाहे सफ़र में हो, कोई मर्ज़ हो, सुख में हो या तकलीफ़ में हर हालत में नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है– बीमारी बड़ी हो और खड़े होने के लाएक़ न हो तो बैठ कर पढ़े– बैठ भी नहीं सकता हो तो लेटे लेटे इशारे से पढ़े। नमाज़ का तर्क करना गुनाहे अज़ीम है चाहे मुसीबतों के पहाड़ ही क्यों न टूट पड़े हों। ●

सज्दा सह्व

नमाज़ पढ़ने में कभी भूल भी हो जाती है– उसकी तलाफ़ी के लिये आख़री रकअत में अत्तहीयात पढ़ कर दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे किये जाते हैं– इसको सज्दा सह्व यानी भूल का सज्दा कहते हैं। सज्दा सहव् वाजिबाते नमाज़ से एक या कई वाजिब के भूल से छूट जाने पर किया जाता है– लेकिन नमाज़ के फ़राइज़ से कोइ फ़र्ज़ छूटा हो या जान बूझ कर कोई वाजिब तर्क किया हो तो नमाज़ दोहराना होगी– सज्दा सह्व से काम नहीं चलेगा। सज्दा सह्व एक ही बार (२ सज्दे) किया जाता है चाहे एक या ज़्यादा वाजिब छूटे हों। ●

सज्दा तेलावत

क़ुरआन शरीफ़ में चौदह जगहें ऐसी हैं जिनको पढ़ने या सुन्ने से सज्दा वाजिब हो जाता है– इसी को सज्दा-ए-तेलावत कहते हैं। सज्दा तेलावत में सिर्फ़ एक ही सज्दा किया जाता है। ●

नमाज़े तौबा

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स से भी कोई गुनाह हो जाए तो वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़े और फिर अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करे तो अल्लाह तआला उसकी मग़्फ़िरत कर देगा। नमाज़े तौबा की नीयत इस तरह करे :

नीयत नीयत करता हूँ दो रक्अत नफ़्ल सलात तौबा की, वास्ते अल्लाह तआला के रुख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

हर मुश्किल के लिये नमाज़

जब कोई परेशानी, रंज, मुसीबत या ख़ौफ़ हो– सख़्त आंधी या ज़लज़ला हो, बिजली गिरे, ताऊन या हैज़ा फैले या दुश्मन का डर हो तो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करे और नफ़्ल नमाज़ें अपने अपने घरों में बग़ैर जमाअत के पढ़े और नमाज़ के ज़रया अल्लाह तआला से

मदद चाहे— हज़रत हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि रसू
ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई मुश्किल दरपेश हो
थी तो झट नमाज़ में लग जाते थे। ●

मर्द व औरत की नमाज़ का फ़र्क़

औरतें भी उसी तरह नमाज़ पढ़ें जैसे नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बय
किया गया है, लेकिन कुछ चीज़ों का मर्द व औरत की नमाज़ में फ़
है, वह नीचे लिखी जाती हैं—

१. तक्बीरे तहरीमा के वक़्त मर्दों को चादर वग़ैरह से हाथ निकाल कर कानों तक उठाना चाहिए और औरतों को हर हाल में बग़ैर हाथ निकाले कंधों तक उठाना चाहिए। ○

२. तक्बीरे तहरीमा के बाद मर्दों को नाफ़ के नीचे हाथ बांधना चाहिए और औरतों को सीने पर। ○

३. मर्दों को दाएं हाथ की छोटी उंगली और अंगूठे का हल्क़ा बनाकर बाएं हाथ की कलाई पर बिछा देना चाहिए और औरतों को दाहिनी हथेली बायीं हथेली के पिछले हिस्से पर रखना चाहिए। मर्द की तरह हल्क़ा बनाना और बायीं कलाई न पकड़ना चाहिए। ○

४. मर्दों को रुकूअ में अच्छी तरह झूकना चाहिए कि सर और पीठ बराबर हो जाएं और औरतों को सिर्फ़ इतना झुकना चाहिए कि जिस से उनके हाथ घुटनों तक पहुंच जाएं। ○

५. मर्दों को रुकूअ में उंगलियां फैला कर घुटनों पर रखना चाहिए और औरतों को बग़ैर फ़ैलाए मिला कर रखना चाहिए। ○

६. मर्दों को रुकूअ की हालत में कुहनियां पहलू से अलग रखना चाहिए और औरतों को पहलू से मिला कर रखना चाहिए। ○

७. मर्दों को सज्दे में पेट रानों से और बाज़ू बग़ल से जुदा रखना चाहिए और औरतों को मिला हुआ। ○

८. सज्दे में मर्द की कुहनियां ज़मीन से उठी हों और औरतों की ज़मीन पर बिछी हों। ○

९. मर्दों को सज्दे में दोनों पैर उंगलियों के बल खड़े रखना चाहिए, मगर औरतों को दोनों पांव बाहर की तरफ़ निकालने होंगे। ○

१०. मर्दों को बैठने की हालत में बाएं पांव पर बैठना चाहिए और दाहिने पांव को उंगलियों के बल खड़ा रखना चाहिए और औरतों को दोनों पांव दाहिनी तरफ़ निकाल कर बाएं सुरीन (चूतड़) पर बैठना चाहिए। ○

११. औरतों को किसी वक़्त बलन्द आवाज़ से क़िरअत करने का इख़्तियार नहीं, उनको हर वक़्त धीमी आवाज़ से क़िरअत करना चाहिए। ○

इमामत के बारे में

इमामत का सब से ज़्यादा हक़दार वह आदमी है, जो मौजूद लोगों में सब से ज़्यादा मस्अलों का जानने वाला हो, बशर्ते कि क़ुरआन शरीफ़ ऐसा ग़लत न पढ़ता हो जिस से नमाज़ न हो। इसके बाद सब से ज़्यादा हक़दार वह है जो क़ुरआन शरीफ़ सबसे ज़्यादा ठीक पढ़ता हो। इसके बाद वह जो सबसे ज़्यादा गुनाहों से परहेज़ करने वाला हो, इसके बाद वह जिस की उम्र सबसे ज़्यादा हो, इसके बाद वह जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों, इसके बाद वह जो ज़्यादा ख़ूबसूरत हो, इसके बाद वह जो नसली शराफ़त में बढ़ा हुआ हो।

मस्अला *बिद्अती, फ़ासिक़, जाहिल, देहाती और ना-पाकी में एहतियात न करने वाले अंधे के पीछे नमाज़ मक्रूह है।*

मस्अला *जिस मस्जिद का इमाम मुक़र्रर है, इमामत का हक़दार वही है, चाहे कोई शख़्स उससे ज़्यादा आलिम या अच्छा क़ारी मस्जिद में हाज़िर हो गया हो, हां, अगर इमाम इजाज़त दे दे तो दूसरी बात है।*

मस्अला दाढ़ी मुंडाने वाला या इतनी दाढ़ी रखनेवाला, जो एक मुट्ठी से कम हो, फ़ासिक़ है, उसके पीछे नमाज़ मक्रूह है।

मस्अला जिस शख़्स की दीनी ज़िन्दगी ख़राब हो और उसकी वजह से उसके मुक़्तदी नाराज़ हों, उसको इमामत करना मक्रूह है।

मस्अला जो शख़्स दीवाना हो या नशे में हो, उसके पीछे किसी की नमाज़ दुरुस्त नहीं।

मस्अला जिसने वुज़ू व ग़ुस्ल किया हो, उसकी नमाज़ माज़ूर के पीछे न होगी।

मस्अला जो शख़्स नफ़्ल या सुन्नत पढ़ रहा हो, उसके पीछे फ़र्ज़ पढ़ने वाले की नमाज़ न होगी और नफ़्ल नमाज़ फ़र्ज़ पढ़ने वाले के पीछे हो जाएगी।

मस्अला एक फ़र्ज़ (जैसे ज़ुहर) पढ़ने वाले के पीछे दूसरा फ़र्ज़ (जैसे अस्र) पढ़ने वाले की नमाज़ न होगी।

मस्अला जो शख़्स तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ रहा हो, उसके पीछे उसकी नमाज़ हो जाएगी, जो वुज़ू करके पढ़ रहा है।

रोज़ा

रमज़ान शरीफ़ अल्लाह की इबादत करने और उस से मग़्फ़िरत तलब करने का महीना है।

रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना हर बालिग़ मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है और इसलाम के पाँच अरकान में से एक। ○

रोज़ा रखने की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا مِّنْ
شَهْرِ رَمَضَانَ الْمُبَارَكِ فَرْضَةً لَّكَ يَا اللّٰهُ فَتَقَبَّلْ
مِنِّيْ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ط

नवैतु अन असू म ग़दम मिन शहरि र-म-ज़ानिल मुबारकि फ़र्ज़ातल्लका या अल्लाहु फ़-त-क़ब्बल मिन्नी इन् न-क अन्तस समीउल अलीम ●

रोज़ा खोलने की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَبِكَ
اٰمَنْتُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ ÷

अल्ला हुम्मा ल-क-सुमतु व बिका आमन्तु व अलैहि तवक्कलतु व अला रिज़्क़िका अफ़्तरतु ●

तरावीह की नमाज़

तरावीह की नमाज़ रमज़ान में इशा के बाद पढ़ी जाती है। यह बीस रक्अत दस सलामों के साथ सुन्नत है। बेहतर यह है कि यह जमाअत के साथ पढ़ी जाए। हर चार रक्अत के बाद थोड़ी देर आराम करना पसंदीदा है। जितनी देर आराम के लिए बैठे, उस वक़्त यह तस्बीह पढ़े।

سُبْحَانَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ
سُبْحَانَ ذِى الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ
سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ
اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ

सुब्हा-न ज़िल मुल्कि वल-म-ल कूति सुब्हा-न ज़िल अिज़्ज़ति वल अज़्मति वल हैबति वल-क़ुद-रति वल-किब्रियाइ वल ज.ब रूत ● सुब्हानल-मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुदूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रूह ● अल्लाहुम-म अजिर्ना मिनन्नार--या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु●

• ईदैन यानी दोनों ईदों की नमाज़ •

साल भर में दो ईदें हैं— एक ईदुल फ़ित्र, दूसरी ईदुल अज़्हा। इन दोनों ही ईदों में ये काम सुन्नत या मुस्तहब हैं— ग़ुस्ल और मिसवाक करना, अच्छे कपड़े पहना, ख़ुश्बू लगाना, "ईदुल फ़ित्र" के दिन नमाज़ से पलहे कोई मीठी चीज़ खाना, सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा कर के जाना, ईदुल अज़्हा में नमाज़ के बाद, क़ुर्बानी में से खाना, शहर से बाहर ईदगाह में ईद की नमाज़ पढ़ना, पैदल जाना, एक रास्ते से जाना, दूसरे रास्ते से आना, रास्ते में *तक्बीर अय्याम-ए-तशरीक़* कहते हुए जाना, ईदुल फ़ित्र में धीरे-धीरे और ईदुल अज़्हा में ऊँची आवाज़ से तक्बीर कहना, इदुल अज़्हा से एक दिन पहले यानी नवीं ज़िल्हिज्जा की नमाज़े फ़ज्र से तेरहवीं तारीख़ की नमाज़े अस्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बलन्द आवाज़ से अकेला, बाजमाअत, अदा, क़ज़ा, सफ़र, हज़र, मर्द औरत हर एक पर तक्बीर पढ़ना वाजिब है। ईदैन की नमाज़ की नीयत पहले लिखी जा चुकी है। ○

तक्बीर अय्याम-ए-तशरीक़

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ
اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ ۞

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अकबर ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लहिल हम्द •

नमाज़ शबे क़द्र की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ اللَّيْلَةِ الْقَدْرِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۞

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ लैलतुल क़द्र की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर •

शबे क़द्र की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ

ए अल्लाह! बेशक तू माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसन्द करता है, इसलिये तू मुझे माफ़ करदे। •

नमाज़ लैलतुल बरअत (शबे बरात)

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ لَيْلَةِ الْبَرَآءَةِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۞

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ लैलतुल बरअत की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर •

नमाज़े इश्राक़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْاِشْرَاقِ سُنَّةُ
رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۞

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इश्राक़ सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर •

इश्राक़ की नमाज़ का वक़्त सूरज निकल जाने के बाद से शुरू होता है, यह नमाज़ दो दो रकअत करके कम-से-कम चार और ज़्यादा बारह रकअत तक है। ○

नमाज़े चाश्त की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى
رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الضُّحٰى سُنَّةُ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا
اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۞

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ चाश्त' सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

नमाज़े चाश्त दो दो रकअत करके कुल चार रकअत पढ़ी जाती है, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम हमेशा चार रकअत ही पढ़ा करते थे, इस नमाज़ का वक़्त दिन चढ़े (क़रीब १० बजे) यानी इश्राक़ की नमाज़ के बाद होता है। ○

नमाज़े तहज्जुद की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ التَّهَجُّدِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ तहज्जुद सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

तहज्जुद की नमाज़ दो रकअत से बारह रकअत तक है— यह नमाज़ रात गहरी होने पर यानी आधी रात के बाद पढ़ी जाती है, इस नमाज़ के पढ़ने का बहुत ज़्यादा सवाब है। बहुत ताकीद भी है। ○

नमाज़े अव्वाबीन की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْاَوَّابِيْنَ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल अव्वाबीन' की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

नमाज़े अव्वाबीन का वक़्त बाद नमाज़े मग़रिब और क़ब्ल ईशा तक बतौर नफ़्ल के है। यह नमाज़ दो दो रकअत करके ६-१२ या २० रकअत तक है वैसे छः रकअत की ही ज़्यादा रिवायतें मिलती हैं— जिसने यह छःरकअतें पढ़ीं— उसकी यह नमाज़ बारह साल की इबादत के बराबर होगी। ○

नमाज़े इस्तिख़ारा की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْاِسْتِخَارَةِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इस्तिख़ारा की, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

यह नमाज़ किसी काम के करने या न करने के सही फ़ैसले तक पहुँचने के लिये, अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने का ज़रया है- - अल्लाह तआला दिल में दुरुस्त बात डाल देते हैं। ○

नमाज़े हाजत की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْحَاجَتِيْ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ हाजत की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

जब किसी को कोई हाजत या ज़रुरत पेश आए तो वुज़ू करे और दो रकअत नमाज़े हाजत पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ करे। ○

नमाज़े कुसूफ़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْكُسُوْفِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ÷

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ कुसूफ़ सुन्नत रसूले पाक की वास्ते

अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

सूरज ग्रहन के वक़्त दो रकअत नमाज़े कुसूफ़ व आवाज़े बलन्द पढ़ना सुन्नत है– जमाअत के साथ पढ़ना बेहतर है, मुस्किन न हो तो अकेले भी पढ़ी जा सकती है। ○

नमाज़े ख़ुसूफ़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْخُسُوْفِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ख़ुसूफ़' सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

चाँद ग्रहन के वक़्त दो रकअत नमाज़े ख़ुसूफ़ पढ़ना सुन्नत है– लम्बी-लम्बी सूरतों के साथ ग्रहन ख़त्म होने तक यह नमाज़, दीगर नफ़्ल नमाज़ें, तिलावत, ज़िक्र अज़कार वग़ैरा करते रहना सुन्नत है– औरतों का इस कैफ़ियत में रहना दौराने ग्रहण बेहतर है। ○

नमाज़े इस्तिसक़ा की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْاِسْتِسْقَاءِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इस्तिसक़ा की, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

जब बारिश न हो और सूखा पड़ने लगे तो पानी के लिये अल्लाह से दुआ करना सुन्नत है– लोग जमा होकर जमाअत के साथ यह नमाज़ पढ़ें और अल्लाह से मदद चाहें। ○

(नमाज़) सलातुत तसबीह की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ التَّسْبِيْحِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ सलातुत तसबीह सुन्नत रसूले पाक की, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

सलातुत्तस्बीह में बे इन्तिहा सवाब है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अब्बास रज़िअल्लाहु. तआला अन्हु से फ़रमाया कि ए चचा! अगर तुमसे हो सके तो सलातुत्तस्बीह हर रोज़ एक बार पढ़ो अगर यह न हो सके तो महीने में एक बार और यह भी न हो सके तो साल में एक बार और यह भी न हो सके तो उम्र में एक बार। ○

सलातुत तसबीह की तरकीब

नीयत करने और तकबीरे तहरीमा (अल्लाहु अकबर कहने और हाथ बांधने) के बाद **सना** पढ़े– फिर १५ बार यह तसबीह पढ़े :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व लाहौ ल वला क़ुव् वता इल्ला बिल्ला हिल अ़लीइल अ़ज़ीम ○

फिर *तअ़व्वुज़, तसमीयह, सूरः फ़ातिहा* और कोई सूरः पढ़ कर दस (१०) बार ऊपर वाली तसबीह पढ़े फिर रुकू करे और रुकू में १० बार पढ़े फिर रुकू से सर उठाए और तसमी व तहमीद के बाद १० बार यही तसबीह पढ़े फिर सज्दा को जाए और इसमें दस मरतबा पढ़े फिर सज्दा से सर उठाए तो बैठकर दस १० बार पढ़े

फिर दूसरे सज्दा में जाए तो दस १० बार पढ़े इसी तरह चार रक्अत पढ़े और हर रकअत में ७५ यानी कुल ३०० बार यह तसबीह पढ़े- – यह तसबीह रुकू और सुजूद की तसबीहात *सुब्हा न रब्बियल अज़ीम* और *सुबहा न रब्बियल अअला* कहने के बाद पढ़े। ○

क़ुरबानी की नीयत और तरीक़ा

❑ जब क़ुरबानी का जानवर लेटा दे तो क़िब्ला रुख़ होकर यह पढ़े ❑

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝ اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ پھر بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

इन्नी वज्जहतु वज्हि य लिल्लज़ी फ़ त रस्समावाति वल अर्ज़ हनीफ़वँ व मा अना मिनल मुशरिकीन ● इन्न सलाती व नुसुकी व महया य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ● ला शरी क लहू व बिज़ालि क उमिर्तु व अना मिनल मुसलिमीन, अल्लाहुम्म मिन-क व ल-क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर ●

पढ़ कर ज़बह करे, ज़बह के बाद अगर अपनी तरफ़ से क़ुरबानी की है तो इस तरह कहे— اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِیْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِیْلِكَ اِبْرٰهِیْمَ عَلَیْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

अल्लाहुम्म तक़ब्बलहु मिन्नी कमा तक़ब्बल त मिन हबीबि क मुहम्मदिंव व ख़लीलि क इबराही म अलैहिमस्सलातु वस्सलाम● *अगर किसी दूसरे के नाम से करे तो लफ़्ज़ मिन्नी की जगह उसका*

और उसके बाप का नाम ले। ○

अक़ीक़ा की तरकीब और दुआ

जिस के कोई लड़का या लड़की पैदा हो तो बेहतर है कि सातवीं दिन उसका सर मुंडवादे और बालों के वज़न के बराबर चाँदी या उसकी रक़म सदक़ा करे और कोई इस्लामी नाम रख कर उसकी तरफ़ से जानवर ज़बह करे-यही अक़ीक़ा है। अगर लड़का हो तो दो बकरी या दो भेड़, गुन्जाइश न हो तो एक ही और लड़की हो तो एक बकरी या एक भेड़ ज़बह करे, जब अक़ीक़ा का जानवर ज़बह करना हो तो उसको लेटा दे और ख़ुद क़िब्ला रुख़ होकर (लड़का हो तो) यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِیْقَةُ ابْنِیْ فُلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِّابْنِیْ مِنَ النَّارِ اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

फिर बिस्मिल्लाह- अल्लाहु अकबर कह कर ज़बह करे। अगर लड़की हो तो यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِیْقَةُ بِنْتِیْ فُلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِّبِنْتِیْ

लफ़्ज़ फ़ुलाँ की जगह लड़का या लड़की और उसके बाप का नाम ले।

जनाज़े का बयान

ग़ुस्ल और कफ़न-व-दफ़न

जब किसी मुसलमान की मौत क़रीब आ जाए और जान निकलने लगे, तो उसको चित लिटा दो और उसके पांव क़िब्ले की तरफ़ कर दो और सर ऊंचा कर दो ताकि मुंह क़िब्ले की तरफ़ हो जाए और उसके पास बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से कलिमा तैयबा पढ़ो ताकि तुम से सुनकर वह भी पढ़ ले, लेकिन उससे यह मत कहो कि पढ़, इस लिए कि वह सख़्त मुश्किल का वक़्त है। ख़ुदा न करे, वह पढ़ने से इंकार कर दे या मुंह से कुछ और निकल जाए। सूरः यासीन शरीफ़ पढ़ने से मौत की सख़्ती कम होती है, उसके सिरहाने या किसी दूसरी जगह उसके पास बैठकर यासीन शरीफ़ पढ़ दो या किसी से पढ़वा दो, जब रूह निकल जाए तो उसका मुंह किसी कपड़े से इस तरह बांध दो कि ठोड़ी के नीचे से निकाल कर दोनों जबड़ों से सर पर ले जाकर बांध दो, ताकि मुंह न फैल जाए और पांव के दोनों अंगूठे मिला कर बांध दो और आंखें बन्द कर दो और बन्द करते वक़्त यह पढ़ो—

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

وَاجْعَلِ اللّٰهُمَّ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ ۞

बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल म वज् अ़ल अल्लाहुम-म मा ख़-र-ज इलैहि ख़ैरम मिम्मा ख़-र-ज अ़न्हु ●

फिर उसको चादर वग़ैरह उढ़ाकर नहलाने का इन्तिज़ाम करो।

मसअला उसके पास लोबान वग़ैरह कोई ख़ुश्बू सुलगा दो, हैज़ व निफ़ास वाली औरत और जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो, उसके पास न रहे और जब तक उसको ग़ुस्ल न दे दिया जाए, उसके पास क़ुरआन

मय्यत को नहलाना

जब नहलाने का इरादा करो, किसी ताक़ते या बड़े नाक़ते को (जिस पर ग़ुस्ल देना हो) लोबान या अगर बत्ती की धूनी ३ बार या ५ या ७ बार दे दो, फिर मुर्दे को उस पर लिटा दो और इसके पहने हुए कपड़े अलग कर दो और उसकी नाफ़ से घुटने तक एक कपड़ा सतर छिपाने के लिए डाल दो और ग़ुस्ल देना शुरू करो।

पहले मुर्दे को इस्तिंजा कराओ, लेकिन उसकी रानों और इस्तिंजे की जगह को हाथ न लगाओ और उसपर निगाह भी न डालो, बल्कि अपने हाथ में कोई कपड़ा लपेट लो और जो कपड़ा नाफ़ से लेकर रानों तक पड़ा है, उसके अन्दर-अन्दर धुलाओ, फिर उसको वुज़ू करा दो, लेकिन न कुल्ली कराओ और न नाक में पानी डालो, पहले मुंह धुला दो, फिर दोनों हाथ कुहनियों समेत, फिर सर का मसह, फिर दोनों पांव धुला दो और मुंह और कानों में रुई भर दो, ताकि वुज़ू कराते और नहलाते वक़्त पानी अन्दर न जाने पाए। जब वुज़ू करा चुको तो सर को किसी चीज़ से जिससे साफ़ हो जाए, मल कर धोओ, फिर मुर्दे को बायीं करवट लिटा कर शीत गर्म पानी तीन बार सर से पैर तक डालो, यहां तक कि बायीं करवट तक पानी पहुंच जाए, फिर दाहिनी करवट पर लिटा दो और इसी तरह सर से पैर तक तीन बार इतना पानी डालो कि दाहिनी करवट तक पहुँच जाए। इसके बाद मुर्दे को अपने बदन की टेक लगा कर बिठाओ और उसके पेट को धीरे-धीरे मलो, अगर कुछ पख़ाना वग़ैरह निकले तो पोंछ कर धो डालो और वुज़ू और ग़ुस्ल में उसके निकलने से कोई नुक़सान नहीं, इसके बाद फिर उसे बायीं करवट पर लिटाओ और काफ़ूर पड़ा हुआ पानी सर से पांव तक तीन बार डालो।

कफ़नाना

मर्द को तीन कपड़ों में और औरतों को पांच कपड़ों में कफ़न देना सुन्नत है, सब की तफ़्सील यह है—

१. *इज़ार सर से लेकर पांव तक।*

२. *चादर, जो इज़ार से एक काथ बड़ी हो, इसको लिफ़ाफ़ा कहते हैं।*

३. *कुरता, गले से लेकर पांव तक, जिसमें न आस्तीन हों, न कलियां हों, उसको कफ़नी भी कहते हैं। ये तीनों कपड़े मर्द व औरत दोनों के कफ़न होते हैं। औरत के कफ़न में दो कपड़े, जो ज़्यादा हैं-*

१. एक सर बंद, जो तीन हाथ लंबा हो,

२. दूसरा सीना बंद, जो छाती से लेकर रानों तक हो। क़ब्रस्तान ले जाते वक़्त जो चादर ऊपर डालते हैं, वह कफ़न से अलग है, लेकिन औरत के जनाज़े पर चादर डालना पर्दे की वजह से ज़रूरी है और मर्द के जनाज़े पर डालना ज़रूरी नहीं है। आम तौर से मर्द के कफ़न में ऊपर की चादर के अलावा दस मीटर कपड़ा ख़र्च होता है और औरत के लिए ऊपर की चादर लेकर २२ मीटर लगता है और बच्चे का कफ़न उसके मुनासिबे हाल लिया जाए।

जब कफ़नाने का इरादा करो तो चारपाई पर अव्वल लिफ़ाफ़ा, उसपर इज़ार फिर उस पर कफ़नी का वह हिस्सा जो मय्यत के नीचे रहेगा, बिछा दो और कफ़नी के उस हिस्से को, जो ऊपर रहे, समेट कर सिरहाने की तरफ़ रख दो। फिर मुर्दे को ग़ुस्ल वाले तख़्त से उठा कर किसी कपड़े से उस का सारा बदन पोंछ कर फैलाए हुए कफ़न पर धीरे से लिटा दो और कफ़नी के उस हिस्से को, जो सिरहाने की तरफ़ समेट कर रखा है, मुर्दे के गले में डाल कर पैरों की तरफ़ बढ़ा दो और सर ढांकने के लिए जो कपड़ा उसके बदन पर पहले से है, उस

को निकाल दो। सर और दाढ़ी पर और सज्दा करने की जगहों यानी पेशानी, नाक, दोनों हथेलियों और पांव के दोनों पंजों पर काफ़ूर मल दो, फिर इज़ार का बायां पल्ला लौट कर उस पर दायां पल्ला लौट दो, फिर लिफ़ाफ़े को भी इसी तरह कर दो और एक कत्तर लेकर सिरहाने और पांयती चादर (यानी लिफ़ाफ़े) के कोनों को बांध दो। यह मर्द के कफ़नाने का तरीक़ा है।

अगर जनाज़ा औरत का हो तो उसमें यूं करो कि कुर्ता पहना कर सर के बालों को दो हिस्से करके कुरते के ऊपर सीने पर डाल दो, एक हिस्सा दाहिनी तरफ़ और एक हिस्सा बायीं तरफ़ रहे। इसके सर बन्द सर पर और बालों पर डाल दो, उसको न बांधो, न लपेटो। इसके बाद इज़ार लपेटो, पहले बायीं तरफ़ लपेटो, फिर दाहिनी तरफ़, इसके बाद सीना बन्द बांधो, फिर चादर लपेटो, पहले बायीं तरफ़, फिर दाहिनी तरफ़। इसके बाद सिरहाने और पांयती कफ़न में गिरह दे दो। कफ़नाने के बाद जनाज़े की नमाज़ और दफ़नाने में जल्दी करो।

नीयत और तरकीब नमाज़े जनाज़ा

نَوَيْتُ اَنْ اُؤَدِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ تَكْبِيْرَاتِ
الصَّلٰوةِ الْجَنَازَةِ اَلثَّنَاءُ لِلّٰهِ تَعَالٰى وَالدُّعَاءُ
لِهٰذَا الْمَيِّتِ اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا الْاِمَامِ مُتَوَجِّهًا
اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ۔

नीयत की मैंने नमाज़े जनाज़ा की ४ तकबीरों के साथ वास्ते अल्लाह तआला के, तारीफ़ अल्लाह तआला की और दुआ इस मय्यित के लिये मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ पीछे इस इमाम के।

फिर कानों तक दोनों हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहते हुए दोनों हाथों को नाफ़ के नीचे बाँध ले फिर यह **सना** पढ़े –

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा न क अल्लाहुम्म व बिहम्दि क व तबा रकस्मु क व तआला जद्दु क व जल्ल सनाउ क व लाइला ह ग़ैरुक ●

फिर बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और दरूदे इबराहीमी यानी नमाज़ वाला दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और बालिग़ का जनाज़ा हो तो यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا
وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ۔
اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ
وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ۔

अल्लाहुम्मग़ फ़िर लिहैयेना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ा इ बिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़ क रिना व उनसाना ● *अल्लाहुम्म मन अह्ययतहू मिन्ना फ़ अह्येही अलल इस्लामि व मन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़ त वफ़्फ़हू अलल ईमान* ●

इसके बाद चौथी तक्बीर कहे फिर बग़ैर कोई दुआ पढ़े सलाम फेरे — अगर *नाबालिग़ लड़के* का जनाज़ा हो तो तीसरी तक्बीर के बाद यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ۔

अल्लाहुम्मज अलहु लना फ़ र तवँ वज अलहु लना अज्रवँ व ज़ुख़्रवँ वज अलहु लना शाफ़िअवँ व मुशफ़्फ़आ ●

और अगर *नाबालिग़ लड़की* का जनाज़ा हो तो यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ۔

अल्लाहुम्मज अलहा लना फ़ र तवँ वज अलहा लना अज्रवँ व ज़ुख़्रवँ वज अलहा लना शाफ़ि अ तवँ व मुशफ़्फ़अ: ●

दफ़्नाना

जब जनाज़े की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो मय्यत को दफ़्न कर दे। दफ़्न करना भी फ़र्ज़े किफ़ाया है। जब दफ़्न के लिए जनाज़े को क़ब्रस्तान में ले चले, तो तेज़ क़दम चले, लेकिन दौड़े नहीं, जनाज़े के साथ पैदल चलना मुस्तहब है।

मस्अला जनाज़ा ले जाते वक़्त कोई दुआ या ज़िक्र (जैसे ला इलाह इल्लल्लाहु या अल्लाहु अक्बर) ऊंची आवाज़ से पढ़ना बिद्अत है और धीमी आवाज़ से भी कोई ख़ास ज़िक्र साबित नहीं। अगर धीरे-धीरे कुछ पढ़े और जनाज़ा ले जाने की सुन्नत न समझे तो यह पढ़ सकता है।

मस्अला जब क़ब्र तैयार हो जाए तो मय्यत को क़िब्ले की तरफ़ से क़ब्र में उतारे, जिसका तरीक़ा यह है कि जनाज़े को क़ब्र से क़िब्ले की तरफ़ रखा जाए और उतरने वाले क़िब्ला रुख़ खड़े होकर मय्यत को क़ब्र में उतारें।

मस्अला क़ब्र में रखते वक़्त— بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ *बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह०* कहना मुस्तहब है।

मस्अला मय्यत को क़ब्र में रख कर दाहिने पहलू पर क़िब्ला रुख़ लिटा देना मस्नून है।

मस्अला क़ब्र में रख कर दोनों गिरहें खोल दो, जो सिरहाने और पांयती खुल जाने के डर से लगायी गयी थीं।

मस्अला औरत को क़ब्र में रखते वक़्त परदा करना मुस्तहब है

और अगर मय्यत का बदन ज़ाहिर होने का ख़तरा हो तो पर्दा करना वाजिब है।

मस्अला क़ब्र में मस्नून तरीक़े पर लिटा कर क़ब्र को बन्द कर दे, क़ब्र भरने के लिए मिट्टी डालने लगे तो हर शख़्स दोनों हाथों में मिट्टी भर कर तीन बार डाले और पढ़े : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ

❑ पहली बार ❑ *मिन्हा ख़लक़्नाकुम* وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ

❑ दूसरी बार ❑ *व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम* وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى

❑ और तीसरी बार

❑ *व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा।*

मस्अला *क़ब्र को एक बालिश्त से ज़्यादा ऊँचा बनाना मक्रूहे तहरीमा है।*

मस्अला *पक्की क़ब्र बनाने की कड़ी मनाही हदीस शरीफ़ में आयी है, इसलिये इससे परहेज़ करो।*

★ किसी के इन्तेक़ाल की ख़बर सुने तो पढ़े :

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ○ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ؕ

★ जनाज़ा देख कर पढ़े:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ ؕ

ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल्लज़ी ला यमूत ○

★ क़ब्रस्तान में दाख़िल होते वक़्त पढ़े:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ وَاِنَّا بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ اِنْشَاءَ اللّٰهُ ؕ

अस्सलामु अ़लैकुम या अहलल क़ुबूरि यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम अन्तुम स ल फ़ुना व नह्नु बिल असर, व इन्ना बिकुम लला हिक़ून इन्शा अल्लाह ○

मस्नून दुआएं

★ सुबह व शाम पढ़ने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ؕ

बिस्मिल्ला हिल्लज़ी ला यज़ुर्रु म अ़स्मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउल अ़लीम ●

तर्जुमा अल्लाह के नाम से हमने सुबह की (या शाम की,) जिसके नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं दे सकती और वह सुनने वाला और जानने वाला है।

❑ *इस दुआ को सुबह में पढ़ लेने से शाम तक और शाम को पढ़ लेने से सुबह तक, दुआ पढ़ लेने वाले को कोई अचानक आजाने वाली बला न पहुंचेगी।* — मिश्कात

★ सोते वक़्त पढ़ने की दुआ

अल्लाहुम्म बिस्मि-क अमूतु व अहया ● اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

तर्जुमा ऐ अल्लाह! मैं तेरा नाम लेकर मरता और जीता हूँ।

❑ सोते वक़्त दरूद शरीफ़, आयतुल कुर्सी, सूरः फ़ातिहा और चारों क़ुल पढ़ले, बड़ी फ़ज़ीलत है।

★ जब नींद से बेदार हो तो पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ؕ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ़्द म अमा-तना व इलैहिन नुशूर ●

तर्जुमा सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें मार कर ज़िन्दगी बख़्शी और हमको उसी की तरफ़ उठकर जाना है।

★ बैतुल ख़ला (पाख़ाना) जाने से क़ब्ल पढ़े

❑ *जब पाख़ाने जाए तो दाख़िल होने से पहले 'बिस्मिल्लाह' कहे*

(हदीस शरीफ़ में है कि शैतान की आंखों और इन्सान की शर्मगाहों के दर्मियान 'बिस्मिल्लाह' आड़ बन जाती है) और यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ ÷

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइस ●

तर्जुमा ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ख़बीस जिन्नों से, मर्द हों या औरत।

★ बैतुल ख़ला (पाख़ाना) से निकल कर पढ़े

❑ पहले कहे *'ग़ुफ़रा-न-क'* غُفْرَانَكَ फिर पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ ÷

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़ ह ब अन्निल अज़ा व आफ़ानी ●

तर्जुमा सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने मुझसे ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे चैन दिया। *'ग़ुफ़रा-न-क'* यानी 'ऐ अल्लाह! मैं तुझ से बख़्शिश का सवाल करता हूँ।

★ खाना शुरू करते वक़्त पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰی بَرَكَةِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व अ़ला बर क तिल्लाह ●

तर्जुमा मैं ने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरू किया।

★ *खाने से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना भूल जाए तो याद आने पर पढ़े :*

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू ●

तर्जुमा मैंने इसके अव्वल व आख़िर में अल्लाह का नाम लिया।

★ खाने के दर्मियान पढ़ता रहे

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म लकल हम्द व ल-क शुक्र ●

तर्जुमा ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं और शुक्र तेरे लिए।

★ खाने के बाद यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ÷

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़-अ़-म-ना व सक़ाना व ज-अ़-ल-न मिनल मुस्लिमीन ●

तर्जुमा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया।

★ पीने का बयान

❑ पानी या कोई और चीज़ बैठ कर पिए और ऊँट की तरह एक सांस में न पिए, बल्कि दो या तीन सांसों में पिए और बर्तन में सांस न ले, न फूंक मारे और जब पीने लगे तो *'बिस्मिल्लाह'* पढ़े और जब पी चुके तो *'अल्हम्दु लिल्लाह'* कहे।

★ दूध-चाय वग़ैरा पी कर पढ़े اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि व ज़िद्-ना मिन्हु ●

तर्जुमा ऐ अल्लाह! तू इसमें हमें बरकत दे और हमको ज़्यादा दे।

★ आईने में अपनी शक्ल देखे तो पढ़े اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

अल्लाहुम्म अन-त हस्सन-त ख़ल्क़ी फ़-हस्सिन ख़ुल्क़ी ●

तर्जुमा ऐ अल्लाह! जैसे तूने मेरी शक्ल अच्छी बनायी, मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे।

★ ख़ुशबू या इत्र इस्तेमाल करे तो पढ़े

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ ۔

सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही ●

तर्जुमा अल्लाह पाक है और सारी तारीफ़ों के लाइक़ वही है।

★ घर में दाख़िल होते वक़्त पढ़े اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَوْلِجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ÷

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क ख़ैरल मौलिजि व ख़ैरल मख़्रजि बिस्मिल्लाहि

व-लज्ना बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि र-ब्बना तवक्कलना ●

★ घर से बाहर निकलते वक़्त पढ़े بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

ला हौ-ल व ला क़ुव् व-त इल्ला बिल्लाह ●

तर्जुमा मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाहों से बचाना और नेकियों की ताक़त देना अल्लाह ही की तरफ़ से है।

❑ किसी सवारी पर *'बिस्मिल्लाह'* पढ़ कर सवार हो फिर जहां ठिकाना मिले या बैठ जाए तो कहे : *'अलहम्दु लिल्लाह'* इसके बाद पढ़े। سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा مُقْرِنِیْنَ ۖ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ؕ

व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़लिबून ●

तर्जुमा अल्लाह पाक है, जिसने उसको हमारे क़ब्ज़े में दे दिया और हम उसकी क़ुदरत के बग़ैर इसे क़ब्ज़े में करने वाले न थे और बिला शुब्हा हमको अपने रब की तरफ़ जाना है।

★ जब सफ़र से वापस होकर अपने इलाक़े में दाख़िल हो, तो पढ़े:

आइबू-न ताइबू-न आ़बिदु-न लिरब्बि-न हामिदून ● اٰیِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

तर्जुमा हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अल्लाह की बन्दगी करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं।

★ पहले सलाम करना सुन्नत है اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाहि व ब-र-क- तुह ● وَبَرَكَاتُهٗ

तर्जुमा आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और, बरकत हो।

★ सलाम का जवाब देना वाजिब है وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

व अ़लैकुमुस्सलामु व रह्मतुल्लाहि व ब-र-क तुह ●

तर्जुमा और आप पर (भी) सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और बरकत हो।